MR. RAJIV RANPA
DOL
A.N.D. College
21.05.2020

Class – 1st year
Course – (A)
Unit – 1
Topic –
Nature of language & Importance

NATURE OF LANGUAGE & Importance

भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं है। भाषा कभी पूर्ण नहीं हो सकती है। यह कहा नहीं जा सकता कि अमुक भाषा का यह अंतिम रूप है। भाषा की यह प्रकृति स्वभावतः परिवर्तनशील है। भाषा का कोई अंतिम रूप हो सकता है लेकिन जीवित भाषा तो सदा ही स्थिर न रहकर विकसित, परिवर्तित व विकसित होती है। भाषा का प्रवाह स्वभावतः कठिनता से सरलता की ओर जाता है। प्रत्येक भाषाओं के इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि सभी भाषाओं में कठिनता से सरलता की ओर जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। प्रयत्न लाघव मनुष्य का स्वाभाविक स्वभाव है। भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर जाती है। प्रारंभ में भाषा स्थूल शब्दों को ही व्यक्त करती थी लेकिन धीरे-धीरे सूक्ष्म भावों, विचारों को भी व्यक्त करने की सामर्थ्य उसमें आती जा रही है। भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है। दिन पर दिन प्रत्येक भाषा का विकास हो रहा है और वह अपने स्वरूप और प्रकार बदलती जा रही है। आज की हिन्दी की तुलना में कल की हिन्दी अधिक सरल और सुबोध होगी। कल की हिन्दी की अपेक्षा आज की हिन्दी अधिक सूक्ष्म और सुबोध

Importance of Language

→ विचार विनिमय का सर्वोत्कृष्ट साधन :-

मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कला कृति है और सर्वश्रेष्ठता का आधार भाषा है। यह वह शक्ति है जिसके कारण मनुष्य पशु से श्रेष्ठ है। मनुष्य भाषा के माध्यम से सरलता एवं अपने विचारों का आदान प्रदान कर सकता है। अपनी अभिलाषाओं को प्रकट कर सकता है। यही उसकी प्रकृति प्रदत्त शक्ति है। यह उसके विकास एवं प्रसार का साधन है।

→ दैनिक जीवन में व्यावहारिक योग्यता –

मानव अपने दैनिक जीवन में सुनने, बोलने, लिखने, पढ़ने की व्यावहारिक रूप से योग्यता प्राप्त करने में भाषा उसकी मदद करती है

→ सामाजिक जीवन में भाषा का महत्व :-

जिस प्रकार समस्त समाजनिष्ठ आचरण बालक समाज में रहकर सीखता है उसी प्रकार शिष्ट भाषा का प्रयोग भी वह समाज में रहकर सीखता है जिससे उसकी सामाजिक कुशलता बढ़ जाती है। वह समाज में अपना एक स्थान बनाता है इसमें भाषा ही उसकी मदद करती है।

→ शिक्षा में भाषा का महत्व :-

मानव के विकास एवं विनाश का मुख्य स्रोत – भाषा ही है। इसके बिना मानव की पहचान समाप्त हो जायेगी।

→ ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन :-

→ मनन शक्ति विचार शक्ति का विकास –

→ साहित्य एवं सांस्कृतिक विकास में भाषा का महत्व –

भाषा का विकास वास्तव में सभ्यता की कहानी है

→ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकता में सहभागिता –

सम्पूर्ण विश्व में बन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का ज्ञान आवश्यक है

Scanned with CamScanner